CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

शिक्षा में नए रुझान और आधुनिक दृष्टिकोण-एन टी एम ए ई- 24

श्रीमती अनीता कांसोटया
शोधार्थी-शिक्षा शास्त्र, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर
डॉ. राम गोपाल शर्मा
शोध निर्देशक, प्रोफेसर, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान अजमेर
Email- anitakumarikansotiya@gmail.com, Mobile- 9414472763

First draft received: 12.05.2024, Reviewed: 20.05.2024, Final proof received: 17.06.2024, Accepted: 22.06.2024

सारांश

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं को बाहर प्रकट करती है। देशकाल परीस्थिति के अनुसार शिक्षा का स्वरूप बदलता रहता है, औपचारिक, अनौपचारिक,निरोपचारिक शिक्षा समाज में चलती रहती है। शिक्षा का स्वरूप सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों है, यह शिक्षक, शिक्षार्थी, वातावरण या पाठ्यक्रम के बीच चलने वाली प्रक्रिया है (जॉन डीवी)। अतः शिक्षा के सैद्धांतिक पक्ष को अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए शिक्षण पद्धतियों, शिक्षण उद्देश्यों, शैक्षिक प्रबंधन में परिवर्तन होता रहता है। भूमंडलीकरण, तकनीकी विकास ,मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण एवं ज्ञान का विस्फोट आदि ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों में परिवर्तन ला दिया है आधुनिक शिक्षा में होने वाले नए-नए परिवर्तनों, आविष्कारों को ही शिक्षा में नवाचार के रूप में जाना जाता है।

वर्तमान युग, वैज्ञानिक युग है पाश्चतिकरण एवं आधुनिकीकरण की ओर बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देते हुए अभी तथ्यात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाने लगा है। इसमें अनुसंधान की भाषा, कार्य कारण संबंध बताने वाली विज्ञान की भाषा पर आधारित ज्ञान की और भी विश्व उन्मुख होने लगा है।

शिक्षा में एक महत्वपूर्ण नवाचार है सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी। जो शिक्षा को वैश्वीकरण के इस युग में तथ्यात्मक वैज्ञानिक ज्ञान पर निर्भर कर आधुनिकता के समीप ला रहा है, आज अत्यधिक तकनीकी विकास हो चुका है जिससे लोगों की शारीरिक दूरियां बड़ी है परंतु मानसिक दूरियों में समीपता आई है। व्यक्ति के कार्यों में भी पारदर्शिता बढ़ती जा रही है आज व्यक्ति झूठ बोलने से डरता है। क्योंकि उसकी वास्तविक स्थिति सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के माध्यम से पता चल जाती है(लाइव लोकेशन के माध्यम से)। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी ने शिक्षा में आमूल-चूक परिवर्तन ला दिया है ।आजकल की शिक्षा तो सूचना संप्रेषण की तकनीकी के बिना पंगु होती जा रही है। इसने शिक्षा को वैज्ञानिकता की ओर बढ़ाया है वर्तमान वैश्वीकरण के युग में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। शिक्षा में अभिक्रमित अनुदेशन, सहायक अनुदेशन, रेखीय, शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन, दूरदर्शन, टेलीविजन, रेडियो इत्यादि के उपयोग ने सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के महत्व को प्रकट किया है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के महत्वपूर्ण साधन मोबाइल फोन ने भी व्यक्ति का जीवन बहुत आसान बना दिया है। मोबाइल से उसे शिक्षा प्राप्त करने एवं रुपयो-पैसों के लेनदेन करने में आसानी हुई है।

मुख्य-शब्द : *वैश्वीकरण, आधुनिकता, वैज्ञानिक तथ्यात्मक ज्ञान, पारदर्शिता, सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, साक्षरता,अनौपचारिक शिक्षा इत्यादि.*

प्रस्तावना

विश्व के सबसे बुद्धिमान प्राणी मनुष्य के विवेकशीलता का आधार शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में चलने वाली आजीवन प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के अंदर छुपे हुए विचारों, भावनाओं, आकांक्षा एवं जिज्ञासाओं को वातावरण के साथ सामंजस्य बैठाकर जीवन को सरल एवं सुविधा अनुरूप बनाती है।

शिक्षा की परिभाषा

अरस्तु के शब्दों में,"शिक्षा व्यक्ति की शक्ति का विशेष रूप से, मानसिक शक्ति का विकास करती है। जिससे वह परम सत्य, शिव और सुंदर के चिंतन का आनंद उठा सके"।

इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में शिक्षा महत्वपूर्ण है। विश्व में औद्योगीकरण, वैश्वीकरण एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण देश की सीमाओं में वृद्धि हुई है। इसका श्रेय वैज्ञानिक साक्षरता एवं सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी को दिया जाता है।

वैज्ञानिक साक्षरता का अर्थ

वर्तमान में वैज्ञानिक साक्षरता में बढ़ोतरी हुई है। इस कारण व्यक्तियों में अंधविश्वास, रूढ़िवादी विचार, मिथ्याभ्रम में कमी आई है और व्यक्ति तथ्यात्मक, वैज्ञानिक ज्ञान में विश्वास करने लगा है। अब वह प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन, विभिन्न क्षेत्रों की व्याख्या, एवं भावी घटनाओं एवं परिस्थितियों की भविष्यवाणी करने लगा है और व्यक्ति तथा तथ्यात्मक रूप से जांच किए गए अनुसंधान एवं सटीक ज्ञान के आधार पर निर्णय लेता है, ना की कहा सुनी बातों पर। अब उन्हें यह ज्ञान होने लगा है कि किसी मानव में देवी देवता का आना या किसी नारी को डाकन बना देना, भूत प्रेत का आना, जादू टोना होना आदि सब केवल कपोल कल्पित बातें हैं। जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

शिक्षा में नवाचार सूचना एवं संप्रेषण **तकनीकी**:- वैश्वीकरण, आधुनिकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी विकास के कारण शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षा प्रबंधन में परिवर्तन होता जा रहा है। औद्योगिकरण, जनसंख्या विस्फोट, ज्ञान का विस्फोट अति तीव्र गति से होने के कारण समाज में परिवर्तन हुआ है और इस सामाजिक परिवर्तन ने शिक्षा का स्वरूप ही बदल दिया। नई तकनीक, शिक्षण सिद्धांत, शिक्षण पद्धतियां आदि सभी ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करते हैं उन्हें ही शिक्षा में नवाचार कहकर पुकारा जाता है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी एक महत्वपूर्ण साधन है जिसने शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

संप्रेषण का अर्थ

संप्रेषण में एक अंत: क्रिया समाहित है। जिसमें परस्पर विचारों एवं भावनाओं की साझेदारी होती है। संप्रेषण शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि शिक्षा में विचारों का आदान-प्रदान सर्वाधिक होता है।

अभीसूचना तकनीकी का अर्थ :-जब मनुष्य द्वारा प्रदतों के विश्लेषण में विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मशीन या हार्डवेयर उपकरण अथवा कंप्यूटर द्वारा विश्लेषण करके संप्रेषण किया जाता है तो उसे अभी सूचना तकनीकी कहते हैं।

इस प्रकार सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी वह है जिसमें विभिन्न सूचनाओं का आदान-प्रदान तकनीकी उपकरणों द्वारा होता है। उदाहरण के लिए, ताज महल प्रकरण का अध्ययन अध्यापन कराने हेतु या तो विद्यार्थियों को आगरा भ्रमण कराया जाए तो यह वास्तविक परिस्थितियों में अध्ययन करना कहलाएगा या फिर ताजमहल का प्रारूप (मॉडल) कक्षा में प्रस्तुत कर ताजमहल की बनावट आदि के बारे में पढ़ाया जाए तो यह तकनीकी शिक्षण कहलाता है. इस प्रकार शिक्षण में नई पद्धतियों का उपयोग, कंप्यूटर का उपयोग विभिन्न मुद्रित अनुदेशनात्मक पाठ्य सामग्री एवं मुद्रित अनुदेशनात्मक पाठ्य सामग्री समाहित है। अमुद्रित अनुदेशात्मक पाठ सामग्री रेडियो, दूरदर्शन के विभिन्न प्रसारणों द्वारा संप्रेषित किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न शैक्षिक नवाचार, योजना विधि, समस्या समाधान विधि, कहानी विधि, भ्रमण विधि, वाद विवाद विधि, प्रश्न उत्तर विधि, वर्ग पहेली विधि द्वारा भी शिक्षा में रुचि उत्पन्न की गई है। आज-कल विद्यार्थियों में रुचि विकसित करने के लिए मारिया मांटेसरी की खेल विधि को भी प्रयोग में लिया जाने लगा है, क्योंकि आजकल का बालक अधिक क्रियात्मक एवं सृजनात्मक बन चुका है और उसकी जिज्ञासाएं भी अधिक होती जा रही है इसलिए उसे स्वयं कार्य करके सीखना ज्यादा अच्छा लगने लगा है इसलिए वर्तमान में करके सीखने वाली शिक्षण विधियों पर अधिक दबाव डाला जा रहा है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा में वैज्ञानिक साक्षरता बढ़ाने हेतु सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी एक महत्वपूर्ण नवाचार है। तकनीकी का विकास दिन प्रतिदिन वृद्धि की ओर अग्रसर है। वर्तमान में 5G एवं 6G नेटवर्क तकनीकी आ चुकी है जो शिक्षा में परिवर्तन कर समाज एवं व्यक्ति के साथ-साथ संपूर्ण विश्व में कार्य करने की प्रक्रिया में ही परिवर्तन ला दिया है। व्यक्ति की सोच समझ में भी समय अनुसार परिवर्तन होता जा रहा है जैसे-जैसे व्यक्ति की सोच मैं परिवर्तन हुआ है उसी के आधार पर शिक्षा में नवाचार भी आते जा रहे हैं जिसे वैज्ञानिक साक्षरता में वृद्धि हुई है। आज हर व्यक्ति सड़क पूर्ण बात करता है जब वह स्वयं पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाता है तभी दूसरों की बातों में एवं अनुसंधान पर विश्वास करता है। वर्तमान में वैज्ञानिक अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान में भी उन्नति हुई है जो सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के कारण ही विस्तृत रूप धारण कर पाई है। अतः हम कह सकते हैं की शैक्षिक नवाचार के रूप में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी एवं वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ाने में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में समाहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- सक्सेना, डॉ निर्मल; शिक्षा एवं उदयमान भारतीय समाज; मलिक एंड कंपनी, जयपुर ;2006; पृष्ठ संख्या 30-35
- त्यागी, ओंकार सिंह; उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षक; अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर; पृष्ठ संख्या 5
- अग्रवाल, डॉ. एस.; भावी शिक्षक एवं शिक्षा तकनीकी; श्री कविता प्रकाशन,जयपुर; 2007, पृष्ठ संख्या 309
- शर्मा, डॉ. आर. ए.; अभी सूचना-संप्रेषण एवं शिक्षा तकनीकी; आर. लाल बुक डिपो, मेरठ; 2011; पृष्ठ संख्या 2,40
- शर्मा, डॉ आर ए.; शिक्षण अधिगम में नवीन प्रवर्तन; आर लाल बुक डिपो मेरठ; 2013

- गोस्वामी, नव प्रभाकर; बढ़ते भारतीय समाज में शिक्षक; कविता प्रकाशन, जयपुर; 2006; पृष्ठ संख्या 462-466
- शर्मा, गणपति राय; उदयमान भारतीय समाज और शिक्षा; राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर; 2013;पृष्ठ संख्या 152, 153
- सक्सेना, एन. आर.स्वरूप; उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक; आर लाल बुक डिपो मेरठ; 2007; पृष्ठ संख्या 1-40
- पाराशर, आशीष ; कंप्यूटर साक्षरता एवं इसके शैक्षिक अनुप्रयोग; राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा;पृष्ठ संख्या -225
- सिंह, एच.पी; शर्मा, राजकुमारी; समकालीन भारत और शिक्षा; राधा प्रकाशन मंदिर आगरा;2015;पृष्ठ संख्या 1,2,3
- Http://www nsta. Org, science teacher (national science teaching association)
- NSTA /विज्ञान और बच्चे-अप्रैल/मई-2020